VAN VIHAR NEWSLETTER

JAN-FEB-MAR 2023

संचालक डेस्क

वन विहार नेशनल पार्क एवं चिड़िया घर द्वारा अपने न्यूज लेटर के द्वितीय अंक में माह जनवरी 2023 से मार्च 2023 के बीच वन विहार में हुई मुख्य गतिविधियों के बारे में एक नजरिया में प्रस्तुत किया जा रहा है। यह अंक गिद्ध संरक्षण के लिए समर्पित है। दिनांक 20 व 21 मार्च 2023 को वन विहार द्वारा "मध्य प्रदेश में गिद्ध संरक्षण और पुनरुत्पादन" पर राष्ट्रीय सम्मेलन, आरसीवीपी नरोन्हा एकेडमी फॉर एडमिनिस्ट्रेशन एंड मैनेजमेंट भोपाल में बाम्बे नेचरल सोसायटी के साथ मिलकर आयोजित किया गया था जिसमें देश भर में किए जा रहे गिद्ध संरक्षण एवं संर्वधन कार्यो के ऊपर विचार-विमर्श किया गया, साथ ही भोपाल स्थित गिद्ध संरक्षण केन्द्र के एक्शन प्लान को विचारोपरांत संशोधित किया।

वन विहार द्वारा इन तीन माह में प्रवासी पक्षियों की गिनती, नेचर कैम्प, अनुभूति एवं अन्य गतिविधि जैसे-गौरेया दिवस मनाया गया। हमें हर्ष है कि इस न्यूज लेटर के माध्यम से वन विहार की क्रियाकलापों के साथ-साथ गिद्धों के संरक्षण हेतु वन विहार द्वारा किए जाने वाले गितिविधियों से आपका परिचय कराया जा रहा है।

(श्रीमती पद्मप्रिया बालाकृष्णन)
(आई.एफ.एस.)
संचालक

वन्यप्राणी अंगीकृत करें

वन विहार के वन्यप्राणियों को किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा, मासिक, त्रैमासिक, छ:माही या वर्ष भर के लिए गोद लिया जा सकता है। वन्यप्राणी अंगीकरण योजना के अंतर्गत व्यय की गई राशि 80G के अंतर्गत नियमानुसार आयकर से मुक्त होगी। निम्न वन्यप्राणियों को उनके समक्ष दर्शित राशि, Executive Director M.P. Tiger Foundation Society, Van Vihar National Park, Bhopal के नाम पर चैक जारी कर गोद लिया जा सकता है:-

प्रजाति	वार्षिक राशि रू	अर्द्धवार्षिक राशि रू	त्रैमासिक राशि रू	मासिक राशि रू
बाघ	2,00,000	1,00,000	50,000	17,000
सिंह	2,00,000	1,00,000	50,000	17,000
तेन्दुआ	1,00,000	50,000	25,000	9,000
भालू	1,00,000	50,000	25,000	9,000
लकड़बग्गा	36,000	19,000	10,000	4,000
जैकाल	30,000	16,000	9,000	3,500
मगर	36,000	19,000	10,000	4,000
घड़ियाल	50,000	26,000	14,000	5,000
अजगर	8,000	4,500	2,300	800

Address :
Director, Van Vihar National Park
and Zoo,Bhadbhada Road,
Bhopal – 462003
Phone : 0755 - 2674278
Email : fdvanvnp.bpl@mp.gov.in

Van Vihar is open to tourist on all days of the week except Friday.

@VanViharNationalParkOfficialPage
@vanviharnationalpark.bhopal
@van_vihar
www.vanviharnationalpark.org

Visit our website for park timings and gate charges.

गिद्ध संरक्षण प्रजनन केंद्र भोपाल, मध्य प्रदेश

बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल मध्य प्रदेश वन विभाग, एवं केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण की एक संयुक्त परियोजना

गिद्ध प्रकृति के सबसे कुशल अपमार्जक (scavengers) हैं। वे एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र में एक निश बनाते हैं जो एक स्वस्थ और प्राकृतिक वातावरण को बनाए रखने में मदद करता है। गिद्ध जानवरों के मर जाने पर शवों को ठिकाने लगाने में मनुष्य की मदद करते हैं। उनके पास एक मजबूत पाचन तंत्र है जो उन्हें रोग पैदा करने वाले बैक्टीरिया को पचाने की अनुमति देता है जो मांस को सड़ने में लगातार बढ़ते है। गिद्ध एंथ्रेक्स, फुट एंड माउथ डिजीज और रेबीज जैसे संक्रामक रोगों के प्रकोप और प्रसार को रोकते हैं।

एक समय बहुतायत से दिखने वाले गिद्ध वर्तमान में भारत में विलुप्त होने के कगार पर हैं।

गिद्धों की तीन प्रजातियों की आबादी- पूर्वी सफेद पीठ वाले गिद्ध (जिप्स बेंगालेंसिस), लंबी चोंच वाले गिद्ध (जिप्स इंडिकस) और पतले चोंच वाले गिद्ध (जिप्स टेन्यूरोस्ट्रिस) में 1990 के दशक के बाद से 99% से अधिक की गिरावट आई है।

भोपाल में गिद्ध संरक्षण प्रजनन केंद्र (वीसीबीसी) अप्रैल 2014 में कैद (captivity) में गिद्धों के प्रजनन के लिए भारत के आठ केंद्रों में से एक के रूप में स्थापित किया गया था। यह जिप्स गिद्धों की दो प्रजातियों, ओरिएंटल सफेद पीठ वाले गिद्ध (O.W.R.V.) और लंबी चोंच वाले गिद्ध (L.B.V.) को विलुप्त होने से बचाने के लिए बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी और मध्य प्रदेश वन विभाग के बीच एक सहयोगी पहल है।

वीसीबीसी भोपाल में केरवा बांध के निकट आरक्षित वन क्षेत्र के किनारे स्थित है। यह भोपाल शहर से लगभग 9 किमी और वन विहार राष्ट्रीय उद्यान से 7 किमी की दूरी पर स्थित है। मध्य प्रदेश वन विभाग की 5.5 एकड़ जमीन मेण्डोरी गांव के पास केंद्र स्थापित है।

पूर्वी सफेद पीठ वाले गिद्ध (जिप्स बेंगालेंसिस)

लंबी चोंच वाले गिद्ध (जिप्स इंडिकस)

पतली चोंच वाले गिद्ध (जिप्स टेन्यूरोस्ट्रिस)

हमारे उद्देश्य

- **गिद्धों की दो प्रजातियों में से प्रत्येक के 25 जोड़े की एक संस्थापक आबादी (Founder Population) स्थापित करना।**
- **रिलीज कार्यक्रम की शुरुआत से 10 साल के भीतर जंगल में प्रत्येक प्रजाति के कम से कम 200 पक्षियों की आबादी को फिर से शामिल करना।**

कृत्रिम इनक्यूबेन ऊष्मायन केंद्र (32x14x12') इस भवन का निर्माण 2022 में किया गया था और इसमें एक इनक्यूबेटर रूम, ब्रूडर रूम, चेंजिंग रूम और किचन शामिल हैं। यह सुविधा गिद्धों के अंडों के कृत्रिम ऊष्मायन के लिए उपयोगी होगी ताकि गिद्धों की प्रजनन उत्पादकता में सुधार हो सके।

भोजन

गिद्ध परिस्थितिकीय तंत्र में स्कैवेन्जर के रूप में कार्य करते हैं। वे भोजन के लिए शिकार नहीं करते बल्कि मरे हुए जानवरों को खाते हैं। वीसीबीसी में, उन्हें सप्ताह में दो बार बकरी का मांस खिलाया जाता है। एक गिद्ध को एक हफ्ते में 5 किलो मांस खिलाया जाता है जो उसके शरीर के वजन के 5% के बराबर होता है। गिद्धों को बकरे की ताजा खाल उतारकर उनका शव दिया जाता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि बकरियों के शवों के ऊतकों में डाइक्लोफेनाक न हो, वध से कम से कम 10 दिनों के लिए बकरियों के झुंड को केंद्र की देखभाल में रखा जाता है।

पानी

सभी बाड़ों में पानी के कुंड होते हैं जिन्हें बाड़े में प्रवेश किए बिना बाहर से भरा और खाली किया जा सकता है। सप्ताह में दो बार कुंडों को साफ किया जाता है और ताजा पानी भरा जाता है। हर 15 दिनों में, पानी के कुंडों को खाली कर दिया जाता है, अच्छी तरह से रगड़कर साफ किया जाता है, और चूने से रंगा जाता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि पानी में कोई शैवाल वृद्धि न हो। पानी के कुंडों को हर दिन ताजे पानी से भर दिया जाता है।

बसेरे

एवियरी डिजाइन का एक महत्वपूर्ण पहलू पर्चों की स्थिति है। बसेरे 4-5 फीट लंबे लकड़ी के लट्ठे होते हैं, जिनके चारों ओर खुरदरी सतह देने के लिए नारियल की रस्सी लपेटी जाती है। अधिकांश बसेरे मानव ऊंचाई से ऊपर हैं क्योंकि गिद्ध ऊंचाई पर बैठना पसंद करते हैं। पर्चों की खुरदरी सतह बड़े पक्षियों में पैर की समस्याओं को रोकती है, विशेष रूप से बम्बल-फुट बीमारी या पोडोडर्मेटाइटिस। पर्चों की निगरानी की जाती है और नियमित रूप से सुधारा जाता है।

उपलब्धियों

- केंद्र में सफल प्रजनन वर्ष 2016-17 के प्रजनन काल के दौरान शुरू हुआ, जब लंबी चोंच वाले गिद्ध और सफेद पीठ वाले गिद्ध के एक-एक अंडे से बच्चे निकले और चूजे सफलतापूर्वक निकल गए। वर्ष 2021-22 में प्रजनन के मौसम के दौरान लंबी चोंच वाले गिद्ध के छह अंडे से बच्चे निकले और चूजे सफलतापूर्वक बने।
- इस प्रकार, अब तक कुल 15 लंबी चोंच वाले गिद्धों और 6 सफेद पीठ वाले गिद्धों का सफलतापूर्वक प्रजनन किया जा चुका है।
- वर्तमान में, केंद्र में कुल 60 गिद्ध हैं, जिनमें 41 लंबी चोंच वाले गिद्ध और 19 सफेद पीठ वाले गिद्ध शामिल हैं।
- केंद्र ने गिद्ध संरक्षण के महत्व के बारे में वन विभाग के फील्ड स्टाफ, फार्मासिस्ट, मवेशी मालिकों, सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारियों और गौसेवकों सहित विभिन्न हितधारक समूहों के बीच शिक्षा और जागरूकता गतिविधियों की शुरुआत की है।

हाइलाइट

1. वर्ष-2015 से निरंतर प्रयासों के माध्यम से गिद्ध-विषाक्त दवा डाइक्लोफेनाक के प्रसार को वर्ष-2015 में 50% से वर्ष-2022 में 12% तक कम करने में सफल रहा है।
2. इसके अलावा, गिद्धों की आबादी स्थिर और यहां तक कि थोड़ी बढ़ती हुई दिखाई देती है, जैसा कि वर्ष-2021 में किए गए राज्यव्यापी गिद्ध आँकलन के परिणामों से पुष्टि होती है।

भविष्य की योजनाएं

1. गिद्धों के पुर्नवास के लिए संभावित रिहाई स्थलों की निगरानी करना।
2. गिद्धों की आबादी में गिरावट और वैकल्पिक सुरक्षित दवाओं की उपलब्धता में घातक दवा, डाइक्लोफेनाक और अन्य जहरीले एनएसएआईडीएस की भूमिका के बारे में जनता, निर्णय निर्माताओं और अन्य हितधारकों को शिक्षित करने के प्रयासों को जारी रखना।

मध्य प्रदेश में गिद्ध आँकलन, 2020-21

परिचय

वर्ष-2016 और वर्ष-2018 के बाद तीसरी बार फरवरी 2021 में मध्य प्रदेश की गिद्ध आबादी का अनुमान पूरे राज्य में लगाया गया था। यह अभ्यास म.प्र. वन विभाग द्वारा आयोजित किया गया था और वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-चिड़ियाघर, भोपाल द्वारा समन्वयित किया गया था। इस अभ्यास में वन विभाग के सैकड़ों कर्मचारियों, शोधकर्ताओं और स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

परिणाम

सर्वेक्षण के आधार पर सात प्रजातियों के कुल 9446 गिद्ध दर्ज किए गए। लंबी चोंच वाला गिद्ध (4505) सबसे प्रचुर मात्रा में था, उसके बाद मिस्र का गिद्ध (1866) और सफेद पीठ वाला गिद्ध (1662) था। रेड-हेडेड गिद्ध (93) सबसे कम प्रचुर मात्रा में थे। इसके बाद यूरेशियन ग्रिफॉन (410) और सिनेरियस गिद्ध (317) थे। गिद्धों की कुल संख्या (9446), वर्ष-2019 (8397) और वर्ष-2016 (6998) में की गई पिछली गणना से अधिक थी।

निष्कर्ष

मध्य प्रदेश में गिद्धों की विभिन्न प्रजातियों की जनसंख्या और वितरण पांच साल में तीसरी बार सफलतापूर्वक प्रलेखित किया गया था। परिणामों ने संकेत दिया कि निवासी गिद्ध प्रजातियों की आबादी स्थिर थी, और थोड़ी बढ़ भी रही थी। यह राज्य में गिद्ध संरक्षण के प्रयासों के लिए शुभ संकेत है और इसने हमें अधिक केंद्रित कार्य के लिए सही दिशा प्रदान की है।

त्रैमास में सर्वे कार्य

बर्ड सर्वे:- दिनांक 07.01.2023 को "तीसरे भोज वेटलैण्ड विन्टर काउण्ट" कार्यक्रम के अंतर्गत भोपाल बर्ड्स कंजरवेशन सोसायटी द्वारा म.प्र. स्टेट वेटलैण्ड अथॉरिटी के सहयोग से वन विहार में बर्ड सर्वे का कार्य किया गया जिसमें स्वयं सेवकों ने भाग लिया तथा 102 पक्षियों की प्रजातियाँ देखी गईं।

अनुभूति

- वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू, भोपाल में अनुभूति शिविर कार्यक्रम का आयोजन विभिन्न दिनांको 12.01.2023, 16.01.2023 व 23.01.2023 को किया गया।
- इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यालयों के विद्यार्थियों अर्थात् भविष्य के नागरिकों को वन, वन्यप्राणी एवं पर्यावरण की अनुभूति कराकर, उन्हें उनके संरक्षण हेतु जागरूक एवं प्रेरित किया, विभाग एवं विभागीय अधिकारियों के कार्यो, उत्तरदायित्वों एवं चुनौतियों से विद्यार्थियों को अवगत कराया गया तथा माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा Mission LiFE “Lifestyle for Environment” के मूल मंत्रों से भी विद्यार्थियों को अवगत कराया गया।
- अनुभूति शिविर कार्यक्रम में लगभग 12 शिक्षण संस्थानों के लगभग 668 छात्र-छात्राओं एवं नागरिकों ने भाग लिया एवं विजेताओं को पुरूस्कृत किया गया। अनुभूति कार्यक्रम के मास्टर ट्रेनर के रूप में श्री ए.के.खरे, सेवानिवृत्त उप वन संरक्षक, श्री बाघमारे, सेवानिवृत, उप वन संरक्षक एवं पक्षीविद के रूप में मो. खालिक उपस्थित रहे। इस दौरान श्रीमती पदमप्रिया बालाकृष्णन, संचालक, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू, भोपाल एवं सहायक श्री एस.के. सिन्हा, संचालक वन विहार एवं अन्य अधिकारी कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

नेचर कैम्प

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू, भोपाल में छात्र-छात्राओं में वन, वन्यप्राणियों एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा प्रकृति संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने की दृष्टि से भोपाल शहर एवं उसके आस-पास के ग्रामों के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिये दिनांक 24.01.2023, 31.01.2023, 14.02.2023 व 21.02.2023 को नेचर कैम्प का आयोजन किया किया। नेचर कैम्प में लगभग 4 शिक्षण संस्थानों के लगभग 175 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। पक्षी दर्शन, वन्यप्राणी दर्शन, प्रकृति पथ भ्रमण, स्थल पर विद्यमान वानिकी गतिविधियों की जानकारी, वन, वन्यप्राणी व पर्यावरण से संबंधित रोचक गतिविधियाँ कराई गई एवं जानकारी प्रदान कर उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया गया। भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रजातियों के दर्शन किए जिसमें प्रमुख है इग्रेट, मेग पाई राबिन, ब्रोंज विंग जकाना, किंगफिशर, ग्रीन बी ईटर, टिटहरी, पोंड हेरोन, रेड मुनिया, विहिस्लिंग टील्स कार्मोरेंट, मूरहैन, ड्रोंगो, सिल्वर बिल मुनिया आदि। तितलियों में ग्रे पेनसी, कॉमन ईवनिंग ब्राउन, प्लेन टाईगर, कॉमन ग्रास यलो, ब्लू टाईगर, क्रीमसन रोज आदि को देखकर प्रतिभागी उत्साहित हो उठे। इसके अतिरिक्त बाघ, तेंदुआ, भालू, मगर, घड़ियाल, चीतल, सांभर, नीलगाय आदि वन्यप्राणियों का भी अवलोकन किया। रिर्सोस पर्सन डॉ. एस.आर. बाघमारे जी द्वारा विद्यार्थियों को वन विहार का भ्रमण कराया गया। इस दौरान संचालक वन विहार श्रीमती पदमप्रिया बालाकृष्णन एवं अन्य अधिकारी कर्मचारी भी उपस्थित रहे। कैम्प का संचालन सहायक संचालक वन विहार श्री सुनील कुमार सिन्हा द्वारा किया गया।

नेचर कैम्प छायाचित्र

वन विहार में शैक्षणिक भ्रमण

- **दिनांक 24.01.2023 को प्रशिक्षु IFS अधिकारियों को श्रीमान संचालक महोदय द्वारा जानकारी दी गई।**
- **दिनांक 18.02.2023 को आसम से आए प्रशिक्षु अधिकारियों को वन विहार भ्रमण कराया एवं जानकारी दी।**

- **दिनांक 27.02.2023 को प्रशासन अकादमी से आए प्रशिक्षु अधिकारियों को वन विहार भ्रमण कराया गया एवं जानकारी दी गई।**

त्रैमास में महत्वपूर्ण रेस्क्यू कार्य

तेन्दुआ रेस्क्यू ऑपरेशन

दिनांक 03.02.2023 को चीचली बीट, ग्राम-रसूलिया समर्धा रेंज वनमण्डल, भोपाल

(1) विवरण –

दिनांक 03.02.2023 को संचालक वन विहार को सूचना प्राप्त हुई कि एक तेन्दुआ फंदे में फँसा हुआ है जिसे रेस्क्यू किया जाना है।

(2) रेस्क्यू स्थल पर की गई कार्यवाही –

रेस्क्यू स्थल पर पहुँचने पर मुआयना करने पर एक तेन्दुआ क्लच वायर के फंदे में फँसा हुआ था जिसे बेहोश कर पकड़ने का निर्णय लिया गया, डार्ट गन के द्वारा उक्त तेन्दुआ को बेहोशी की दवा दी गई, बेहोश होने के पश्चात तेन्दुआ की कमर में फंसे क्लच वायर के फंदे को काटा गया एवं तेन्दुआ को बाह्य परीक्षण किया गया उसके पश्चात उसे ट्रांसपोर्ट केज में शिफ्ट कर वन विहार लाया गया।

(3) प्राकृतिक रहवास में छोड़ने की कार्यवाही –

उक्त नर तेन्दुआ को 5 दिन तक वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में गहन निगरानी में रखकर परीक्षण किया गया एवं दिनांक 08.02.2023 को पुन: बेहोश कर स्वास्थ्य कर परीक्षण किया गया, उक्त नर तेन्दुआ जंगल में प्राकृतिक रहवास में छोड़ने हेतु पूर्णत: स्वस्थ पाए जाने पर उसे रेडियो कॉलर लगाकर दिनांक 08.02.2023 को रातापानी अभ्यारण में प्राकृतिक रहवास में छोड़ दिया गया।

दिनांक 05.03.2023 को माननीय मुख्यमंत्री महोदय जी का वन विहार का दौरा

दिनांक 05.03.2023 को माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी, म.प्र. शासन द्वारा वन विहार का भ्रमण कर चल रही गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा इससे और अधिक आधुनिक एवं पर्यटकों के लिए और अधिक सुविधायुक्त बनाए जाने के निर्देश दिए।

माननीय वन मंत्री जी, मध्य प्रदेश शासन का वन विहार का दौरा

दिनांक 02.04.2023 को माननीय वन मंत्री जी, म.प्र., डॉ. कुँवर विजय शाह जी द्वारा वन विहार का भ्रमण कर चल रही गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा यहाँ अन्य आकर्षक बनाने हेतु वन्यप्राणी जैसे- जेब्रा, जिराफ आदि लाने तथा पक्षियों के बसेरों की व्यवस्था करने और उसे अधिक आधुनिक बनाने हेतु निर्देश दिए।

गौरैया दिवस

दिनांक 20.03.2023 को वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में विश्व गौरैया दिवस के अवसर पर भोपाल बर्ड्स कंजर्वेशन सोसायटी वन विहार राष्ट्रीय उद्यान के संयुक्त तत्वाधान एवं मध्य प्रदेश टाइगर साउंडेशन सोसाइटी के सहयोग से गौरैया पर आधारित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें भोपाल बर्ड्स संस्था की डॉक्टर संगीता राजगीर द्वारा वन विहार में भ्रमण करने आए पर्यटक को से गौरैया पर आधारित विभिन्न प्रश्न पूछे गए एवं उन्हें गौरैया के बारे में जानकारी देकर जागरूक किया गया। इस अवसर पर नि:शुल्क कृत्रिम घोंसला का वितरण किया गया एवं प्रश्न के विजेताओं को गौरैया के बैच से पुरस्कृत किया गया। नि:शुल्क घोसलों का वितरण गेट नंबर 1 एवं सर्प व्याख्या केंद्र में किया गया जिसमें कई राज्यों से आए पर्यटक भी शामिल थे। इस अवसर पर वन विहार का स्टाफ भी उपस्थित रहे।

मध्य प्रदेश में गिद्ध संरक्षण और पुनरुत्पादन पर राष्ट्रीय सम्मेलन,

भोपाल दिनांक 20 व 21 मार्च 2023

मध्य प्रदेश में गिद्धों के संरक्षण और पुनरुत्पादन पर राष्ट्र स्तरीय सम्मेलन वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-चिड़ियाघर, भोपाल और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी द्वारा दिनांक 20 और 21 मार्च 2023 को आरसीवीपी नरोन्हा एकेडमी फॉर एडमिनिस्ट्रेशन एंड मैनेजमेंट, भोपाल में संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। सम्मेलन में मुख्य अतिथि श्री जे.एन. कंसोटिया, आई.ए.एस, अपर मुख्य सचिव वन, मध्य प्रदेश के साथ-साथ अन्य वरिष्ठ अधिकारियों जैसे श्री आर.के. गुप्ता, आई.एफ.एस., पी.सी.सी.एफ. (एच.ओ.एफ.एफ.), एम.पी., श्री जे.एस. चौहान, आई.एफ.एस., पी.सी.सी.एफ. (डब्ल्यू.एल.) और चीफ वाइल्ड लाइफ वार्डन, एम.पी. और डॉ. आर.के. महिया, निदेशक, पशुपालन विभाग ने भाग लिया। मुख्य अतिथि श्री जे.एन. कंसोटिया ने मध्य प्रदेश द्वारा गिद्ध संरक्षण में किए गए कदमों की सराहना की एवं वैज्ञानिक रूप से और मजबूत जानकारी की आवश्यकता प्रतिपादित की जो मध्य प्रदेश के दावे "भारत का गिद्ध राज्य" को सुदृढ़ कर सके। उन्होंने पशुपालन विभाग से गिद्ध संरक्षण में उनकी भूमिका को और अधिक गंभीरता से लेने और मवेशियों के इलाज में उनकी सीधी भागीदारी को देखते हुए अधिक योगदान देने की अपील की, जो गिद्धों के भोजन के प्रमुख स्रोत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस दो दिवसीय सम्मेलन में मध्य प्रदेश वन विभाग, पशुपालन विभाग, खाद्य एवं औषधि प्रशासन, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, भारतीय वन्यजीव संस्थान और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी, रॉयल सोसाइटी फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ बर्ड्स, वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर-इंडिया (डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ-इंडिया) और अरुलागम जैसे नागरिक समाज संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

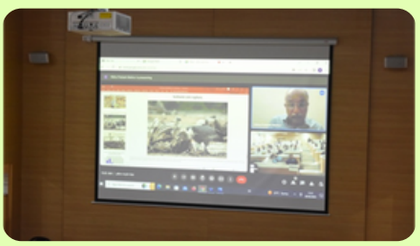

इस सम्मेलन के दौरान, गिद्ध संरक्षण में कई वर्षों के अनुभव वाले वक्ताओं ने गिद्ध संरक्षण के विभिन्न पहलुओं में हुई प्रगति की नवीनतम स्थिति प्रस्तुत की, सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला और संभावित निर्णयों का सुझाव दिया जो नीतिगत स्तर पर लिए जा सकते हैं और फिर क्षेत्रीय स्तर पर स्थानांतरित किए जा सकते हैं। इस सम्मेलन का प्रमुख आकर्षण श्रीमती पद्मप्रिया बालकृष्णन, आई.एफ.एस., फील्ड निदेशक, वन विहार द्वारा आयोजित विचार-मंथन सत्र था जिसके कारण "मध्य प्रदेश के गिद्ध हॉटस्पॉट के भीतर गिद्ध-सुरक्षित जिलों की स्थापना" का संकल्प पारित किया गया। म.प्र. के मुख्य वन्यजीव वार्डन की अध्यक्षता में इस सम्मेलन की एक और उल्लेखनीय उपलब्धि यह रही कि पशुपालन विभाग ने गिद्ध संरक्षण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका का संज्ञान लिया और यह सुनिश्चित करने का संकल्प लिया कि राज्य के सभी पशु चिकित्सक गिद्ध-विषाक्त पशु चिकित्सा दवाओं का उपयोग नहीं करेंगे, जिसमें डाइक्लोफेनाक, एसिक्लोफेनाक, केटोप्रोफेन और निमेसुलाइड शामिल हैं। जानवरों के इलाज के लिए, और गिद्ध-सुरक्षित दवाओं मेलॉक्सिकैम और टोल्फेनामिक एसिड के उपयोग को बढ़ावा देगें।

मध्य प्रदेश वन विभाग ने भोपाल में गिद्ध संरक्षण प्रजनन केंद्र का समर्थन जारी रखने सहित राज्य में गिद्ध संरक्षण के प्रति अपनी निरंतर प्रतिबद्धता का संकल्प लिया। जंगलों में गिद्धों की उत्तरजीविता (सर्वाइबल) दर निर्धारित करने और अंततः प्रजनन केंद्र से गिद्धों की योजनाबद्ध रिहाई के लिए आवास की सुरक्षा के लिए, बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी ने जंगली गिद्धों के उपग्रह टैगिंग की शुरुआत का प्रस्ताव दिया, जिसे सभी हितधारकों से सकारात्मक सहमति मिली।

सभी राज्य-स्तरीय हितधारक "अंतर्राष्ट्रीय गिद्ध जागरूकता दिवस" पर सालाना मिलने पर सहमत हुए जिससे प्रत्येक हितधारक के लिए पहचानी गई संरक्षण गतिविधियों के प्रगति की समीक्षा की जा सके।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में त्रैमासिक में पर्यटकों का आगमन

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में माहवार भ्रमण के लिए आए पर्यटकों की जानकारी:-	
माह	**पर्यटक संख्या**
जनवरी 2023	85958
फरवरी 2023	60077
मार्च 2023	57684

वन विहार के गिद्ध कंजरवेशन ब्रीडिंग सेन्टर के गिद्ध

लॉन्ग बिल्ड वल्चर

- भारतीय देशी गिद्ध (Long-billed Vulture or Indian Vulture)
- वैज्ञानिक नाम : Gyps indicus
- संरक्षण दर्जा : अत्यंत संकटग्रस्त
- विशिष्ट पहचान : विशाल हल्का भूरा पक्षी (मोर से बड़ा) । वयस्कों में लम्बी, काली नग्न (पंख रहित) गर्दन होती है।
- पंखों का फैलाव : 1.96 से 2.58 मीटर।
- पारिस्थितिकीय भूमिका : झुण्ड में रहते हुए मृत जानवरों की माँसपेशियों एवं आंतरिक अंगों का सेवन करते हैं।

कहाँ गए सारे गिद्ध ?

- भारत में 1980 के दशक में गिद्धों की संख्या लगभग चार करोड़ थी, जो वर्ष-2000 उपरांत 99 प्रतिशत समाप्त हो गई।
- वर्तमान में भारत में एक लाख गिद्ध से भी कम बचे हैं।
- इतने कम समय में गिद्धों की भारी तादात में मृत्यु हुई है।

व्हाइट रम्पड वल्चर

- सफेद पीठ वाला गिद्ध (Oriental White backed Vulture or White-rumped Vulture)
- वैज्ञानिक नाम : (Gyps bengalensis)
- संरक्षण दर्जा : अत्यंत संकटग्रस्त।
- विशिष्ट पहचान : विशाल पक्षी, वयस्कों में नग्न भूरी गर्दन, सफेद पीठ, उड़ते समय और पखों के फैलने के बाद पंखों के निचले सफेद पंख स्पष्ट दिखाई देते हैं।
- पंखों का फैलाव : 1.92 से 2.13 मीटर
- पारिस्थितिकीय भूमिका : झुण्ड में रहते हुए मृत जानवरों की मांसपेशियों एवं आंतरिक अंगों का सेवन करते हैं।

गिद्धों की मृत्यु क्यों हो रही है?

- गिद्धों के मृत्यु का मुख्य कारण डाइक्लोफेनेक नामक दर्द निवारक दवा है जो मवेशियों को दर्द एवं सूजन दूर करने हेतू दी जाती है।
- यदि किसी पशु की यह दवा देने से 72 घण्टे के भीतर मृत्यु हो जाए और गिद्ध ऐसे शव को खा जाए तो वह दवा गिद्धों पर दुष्प्रभाव करती है और वह मर जाते हैं।
- डाइक्लोफेनेक दवा गिद्धों के गुर्दे खराब कर देती है जिस कारण उनकी मृत्यु हो जाती है। गिद्ध इस दवा को पचाने में एवं शरीर से बाहर उत्सर्जित करने में असमर्थ होते हैं।

वन विहार परिवार में बदलाव

(अ) नव आगमन

नाम – विजय बाबू नंदवंशी

पद – बायोलॉजिस्ट

शैक्षणिक योग्यता – मास्टर इन वाइल्ड लाइफ साइन्स

अनुभव - नोर्दन वेर्स्टन घाट, सेन्ट्रल इण्डिया, राजस्थान एवं उत्तराखण्ड में काम कर चुके हैं।

कार्य - श्री नंदवंशी जी मार्च 2023 में वन विहार में बायालॉजिस्ट के पद पर आए हैं। इनके द्वारा वन विहार के वन्यप्राणियों की पारिस्थितिकी, पशु व्यवहार, प्रजनन पारिस्थितिकी, आवास प्रबंधन आदि पर काम करना, सभी वैज्ञानिक एवं प्रबंधन कार्यों में मदद करना।

(ब) निर्गमन

इस त्रैमास में वन विहार परिवार के दो सदस्य स्थानांतरित होकर अन्यंत्र पदस्थित हुए –

क्रं.	नाम	पदनाम	नवीन पदस्थिति
1.	सुश्री दीप्ति तंतुवाय	वनपाल	कार्य योजना इकाई, भोपाल
2.	सुश्री स्वाति नामदेव	वनरक्षक	कार्य योजना इकाई, भोपाल

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू के - जू-कीपर

जू-कीपर : नाम – श्री सचिन कुमार परसाई, पद - वनरक्षक

श्री सचिन कुमार प्रसाद वर्ष-2008 में वन विभाग में नियुक्ति उपरांत वन विहार जू, भोपाल में कार्यरत हैं। आपने गणित संकाय में स्नाकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त की है। आपने वनरक्षक की ट्रैनिंग वर्ष-2009 में वन विद्यालय, बैतूल से की तथा क्षमता विकास कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष-2018 में सूरत जू, गुजरात से जू-कीपर की ट्रैनिंग प्राप्त की है।

वर्तमान में इनकी ड्यूटी इकाई सफारी के अंतर्गत रेस्क्यू सेंटर प्रभारी की है। इनके द्वारा रेस्क्यू सेंटर पर वन्यप्राणियों की देख-रेख हाउसिंग की साफ-सफाई वन्यप्राणियों के नित्य प्रतिवेदन, वन्यप्राणियों के रजिस्टर तैयार कर उन्हें अपडेट रखना कार्य किए जाते हैं।

- **प्रतिदिन किए जाने वाले कार्य-**

  हाउसिंग के प्रवेश द्वार पर फुटपाथ में कर्सोलीन डालना, हाउसिंग की लाईजोज पानी में सफाई वन्यप्राणियों के स्वास्थ्य संबंधी दैनिक प्रतिवेदन वरिष्ठ को प्रेषित करना एवं वन्यप्राणियों को पीने हेतु पानी के शुद्धीकरण हेतु आवश्यक मात्रा में क्लोरीन पानी में डालना।

  साप्ताहिक रूप से किए जाने वाले कार्य:-

- वाटर होल का पानी बदलना व सफाई, वन्यप्राणियों की क्रालो की सफाई कार्य, फ्लाई केचर की कार्य क्षमता का निरीक्षण करना, मासिक रूप से किए जाने वाले कार्य, वाटर होल की चूने से पुताई कार्य माह में दो बार एवं कमरों की माह के अंत में ब्लीचिंग से सफाई।

  इन कार्यों के अतिरिक्त समय-समय पर केजों का मेंटेनेंस कार्य जैसे- ऑयल, ग्रीस करना, स्लाइड गेट, पुल गेट आदि के ऑयल ग्रीस कार्य। समय-समय पर बाड़ो में क्रालों में वृक्षों, बाँसों के झुरमुट की सफाई कार्य।

  वर्तमान समय में रेस्क्यू सेंटर पर तीन नर बाघ एवं एक मादा "हायना" है। जू में बाघ की उम्र लगभग 15 से 18 वर्ष होती है। हर बाघ का नेचर अपने आप में अलग होता है। बाघ बहुत ही अनुशासित जीवन जीता है। सुबह घूमना, स्टेलिंग करना बाघ की आदत है। नर बाघ भोजन तेजी से खाते हैं जबकि मादा धीमे-धीमे आराम से। सभी बाघ में एक बात कॉमन है उन्हें पानी में खेलना पसंद है। क्राल बाड़ों में बने वाटर हॉल में बाघ बड़े चैन से बैठते हैं। रेस्क्यू सेन्टर पर टाइगर "सरण" टाइगर "बंधन" एवं टाईगर "शौर्य" है एवं एक मादा "हायना सुंदरी" है। इन कार्यों के अतिरिक्त वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल के रेस्क्यू दल के सदस्य के रूप में कार्य करते हैं।

जू-कीपर : नाम – श्री कालू सिंह जमरा, पद - स्थाई कर्मी

श्री कालू सिंह जमरा वर्ष-1996 से वन विहार जू, भोपाल में कार्यरत हैं। वर्तमान में ड्यूटी इकाई सफारी के अंतर्गत रेस्क्यू सेंटर पर है। श्री कालू सिंह जमरा वन्यप्राणियों की देख-रेख का कार्य बहुत ही कुशलता से करते हैं। वन्यप्राणी की क्रालो की साफ-सफाई कार्य, समय-समय वाटर होल की सफाई व चूने से पुताई कार्य, वन्यप्राणियों को मीट वितरण कार्य व उसके बाद सफाई कार्य व अन्य वन्यप्राणियों की हाउसिंग के आस-पास साफ-सफाई इनके द्वारा कुशलतापूर्वक किया जाता है।

मध्य प्रदेश में पाए जाने वाले गिद्ध

राज गिद्ध (Red-headed Vulture or King Vulture)

यूरेशियाई गिद्ध (Eurasian Griffon)

इजिप्शियन गिद्ध (Egyptian Vulture)

हिमालयी गिद्ध (Himalayan Vulture or Himalayan Griffon)

काला गिद्ध अथवा सिनेरियस गिद्ध (Black Vulture or Cinereous Vulture)

भारतीय देशी गिद्ध (Long-billed Vulture or Indian Vulture)

मैं गिद्ध हूँ।
मैं आपका दोस्त हूँ।
मैं मरे हुए पशुओं के शवों को
खाकर पर्यावरण को साफ और
आपको खतरनाक बिमारियों से दूर रखता हूँ।
पशुचिकित्सा में उपयोग होने वाली डाइक्लोफेनेक दवा के
कारण मेरी प्रजाति खतरे में है।
भारत में मेरी प्रजाति के बहुत कम सदस्य बचे हैं और वह भी कुछ ही क्षेत्रों में।
मेरे बिना स्वच्छ भारत एक अधूरा सपना है।
कृपया डाइक्लोफेनेक और अन्य ऐसी दवाओं का पशुचिकित्सा में उपयोग न
करें जो मेरे और मेरे साथियों के जीवन को संकट में डालती है।

सफेद पीठ वाला गिद्ध (Oriental White backed Vulture or White-rumped Vulture)